Dr. Vandana suman
Professor
Dept - of Philosophy
H. D. Jain College, Ara
UG - Sem - IV - MJC-07
Basic Concepts of Philosophy

1

17 FRIDAY
JANUARY | 2025

"Relation of Philosophy with science."
(दर्शन और विज्ञान का सम्बन्ध)

आज के इस वैज्ञानिक युग में मानव की हर चीज विज्ञान से प्रभावित है। मनुष्य हर वस्तु का वैज्ञानिक अध्ययन करना चाहता है। समाजशास्त्र, अर्थशास्त्र, राजनीतिशास्त्र, इतिहास, मनुष्य का शरीर, मस्तिष्क, व्यवहार, वातावरण हर चीज का वैज्ञानिक अध्ययन होता है। ऐसी स्थिति में दर्शनशास्त्र भी विज्ञान से अलग नहीं रह सकता। विशेषकर समकालीन युग (contemporary period) में तो दर्शन को विज्ञान की राह में लाने के लिए विज्ञानों ने अनेक प्रयत्न किये हैं। वस्तुतः दर्शन और विज्ञान में कुछ ऐसी मूलभूत समानताएँ हैं, जिनसे दोनों को नजदीक लाने से रोका भी नहीं जा सकता। किन्तु दोनों में कुछ अन्तर भी है। दर्शन और विज्ञान की समानताएँ और अन्तर इसप्रकार है—

(1) ज्ञान में रुचि- दर्शन और विज्ञान दोनों की मुख्य रुचि एक ही चीज में है और वह है ज्ञान (Knowledge)। जीवन और जगत के प्रति आश्चर्य और संदेह की भावना से ही दोनों का जन्म होता है। दोनों ही इनके सम्बन्ध में प्रश्न करते हैं और

18 SATURDAY
2025 | JANUARY
WK 03 | 018/347

6 7 8 9 10 11 12
13 14 15 16 17 18 19
20 21 22 23 24 25 26
27 28 29 30 31

अपनी तरफ से दोनों उत्तर देने का प्रयत्न भी करते हैं।

महत्वपूर्ण भेद भी किन्तु यहीं पर दोनों में दोनों का लक्ष्य ज्ञान-प्राप्ति है, किन्तु कैसा ज्ञान और किस चीज का ज्ञान? इस सम्बन्ध में दोनों के अलग-अलग मत हैं। विज्ञान का क्षेत्र अनुभव-जगत् में स्थित तथ्यों का ज्ञान है। [कुछ समकालीन दार्शनिक सम्प्रदाय जैसे व्यवहारवाद (Pragmatism) तार्किक भाववाद (Logical Positivism) आदि को छोड़कर] अन्तिम तत्त्व का ज्ञान प्राप्त करना चाहता है। जिसके लिए वह अनुभव-जगत् के पार भी जाना पड़ता है, किन्तु इस अन्तिम तत्व के ज्ञान के लिए दर्शन विज्ञान की पूर्णतः उपेक्षा नहीं करता। वह उसे भी ध्यान में रखता है। इसप्रकार दर्शन की यहाँ विज्ञान सहायता करता है।

19 SUNDAY

(2) अध्ययन की विधि- विज्ञान और दर्शन दोनों ही अपने-अपने क्षेत्रों में तथ्य और सत्यों की खोज के लिए जिन विधियों का सहारा लेते हैं वे प्रायः समान हैं। दोनों ही आगमन-निगमन (induction-deduction) और

संश्लेषण - विश्लेषण (synthesis - analysis) का सहारा लेते हुए आगे बढ़ते हैं। किन्तु, यहाँ दोनों में मुख्य अन्तर यह है कि जहाँ विज्ञान अन्तिम निष्कर्ष के लिए प्रयोगशाला में पहुँचता है वहाँ दार्शनिक अन्तिम निष्कर्ष के लिए अपने मस्तिष्क अर्थात विचारों का सहारा लेता है। वस्तुतः दर्शन ऐसे अनेक सूक्ष्म तत्वों का अध्ययन करता है जिन पर प्रयोग किया ही नहीं जा सकता; जैसे - आत्मा ईश्वर आदि के स्वरूप और अस्तित्व पर विचार। अतः इसके लिए उसे विशुद्ध चिन्तन - मनन पर निर्भर रहना पड़ता है। इसके अलावा, विज्ञान अपने निर्णय को केवल प्रस्तुत भर कर देता है, अर्थात वह यह बताता है कि क्या है, किन्तु दर्शनशास्त्र यह भी बतलाता है कि क्या होना चाहिए? विज्ञान वास्तविकता का वर्णनमात्र करता है जबकि दर्शनशास्त्र इस वास्तविकता को कैसा होना चाहिए, यह भी बतलाता है। दूसरे शब्दों में, विज्ञान सिर्फ तथ्यों का अध्ययन करता है जबकि दर्शन मूल्यों का भी वर्णन करता है। दोनों की अध्ययन-विधि के सम्बन्ध में एक और महत्वपूर्ण बात है कि यद्यपि दर्शन और विज्ञान दोनों ही संश्लेषण और विश्लेषण

The best and most beautiful things in the world cannot be seen or even touched.

21 | TUESDAY
2025 | JANUARY

विधि का प्रयोग करते हैं, किन्तु प्रमुखतः विज्ञान किसी वस्तु का विश्लेषणात्मक वर्णन करता है, जबकि दर्शनशास्त्र उसकी संश्लेषणात्मक व्याख्या करता है। विज्ञान सम्पूर्ण को विभिन्न इकाइयों में बाँट देता है, जबकि दार्शनिक दूसरे रूपों को एक करके देखने की प्रवृत्ति वाला होता है।

(3) जगत से सम्बन्ध — दर्शनशास्त्र और विज्ञान दोनों ही अनुभव-जगत से सम्बन्धित हैं। दोनों का आधार सामान्य अनुभव के तथ्य हैं। दोनों ही इन तथ्यों की एकता, सामंजस्य और तथ्यों की व्याख्या और विवेचना करते हैं।

किन्तु, जहाँ विज्ञान का क्षेत्र अलग-अलग भागों में बँटा होता है, वहाँ दर्शन की कोई सीमा रेखा नहीं। प्रत्येक विज्ञान एक विशेष विषय का अध्ययन करता है; जैसे वनस्पतिविज्ञान वनस्पति-जगत का, जीवविज्ञान जीव-जगत का, मनोविज्ञान मानसिक जगत का आदि। पर दर्शन के चिंतन में सभी कुछ आ जाता है, जीव-जगत भी वनस्पति जगत भी और मानव का मानसिक जगत भी। इसप्रकार दर्शन विज्ञान से अधिक व्यापक है। इसलिए पॉलसन (Paulsen) ने इसे

विज्ञानों का योग कहा है।

दर्शन केवल विज्ञानों का योग मात्र नहीं है, वरन् वह समस्त विज्ञानों में समन्वय करने वाला शास्त्र भी है। कई बार विभिन्न विज्ञानों के निर्णयों में अन्तर होता है। ऐसी स्थिति में दर्शनशास्त्र उनके मतभेदों को दूर करने का प्रयत्न करता है, जैसे कि जीव-विज्ञान मानता है कि अन्य जीवों के समान मनुष्य भी प्रकृति के अनिवार्य नियमों के निर्देशन में ही कार्य करता है। दूसरी ओर नीतिविज्ञान मानता है कि मनुष्य संकल्प-पूर्वक अपनी स्वेच्छा से क्रियाएँ करता है। दोनों के मतभेदों को दूर करते हुए दर्शन कहता है कि जीवविज्ञान को यह बात सत्य है कि मानव-शरीर अन्य पशु-शरीर के समान प्राकृतिक नियमानुसार कार्य करता है, किन्तु मानव को पशु से एकदम अलग करने वाली एक चीज है, वह है उसका विवेक या बुद्धि। इसके द्वारा मनुष्य संकल्प करने में स्वतंत्र होता है। अतः नीतिशास्त्र की यह बात भी गलत नहीं है कि मनुष्य की स्वेच्छक क्रियाएँ उसके स्वतंत्र संकल्प द्वारा संचालित होती हैं।

(5) अंधविश्वासों का

It is often the small steps, not the giant leaps, that bring about the most lasting change.

निराकरण — दर्शन और विज्ञान दोनों ही सत्य की खोज करना चाहते हैं इसलिए अंधविश्वासों के लिए दोनों के पास स्थान नहीं होता। विज्ञान तो हर चीज को प्रयोग की कसौटी पर कसता है, इसलिए अंधविश्वास तो उसमें आ ही नहीं सकता। दर्शन भी अंधविश्वासों के बजाय तार्किक विचारों को अधिक महत्व देता है। यद्यपि दर्शनशास्त्र के पास प्रयोग की कसौटी नहीं होती किन्तु अपने तार्किक और सूक्ष्म विचारों द्वारा वह भी अंधविश्वासों का निराकरण करता है; विशेषकर दर्शन के आधुनिक युग के दार्शनिकों में हम यह प्रवृत्ति बहुतायत से पाते हैं।

किन्तु अंधविश्वासों का निराकरण करते हुए भी दर्शन विज्ञान के समान धर्म की निंदा नहीं करता उसमें डर नहीं आता। दर्शन धार्मिक ऋषियों और संतों की अनुभूतियों का आदर करता है और इनमें निहित सत्यता को जानने का प्रयत्न करता है। धर्म के समान दर्शन भी ईश्वर, आत्मा आदि पर चिंतन करता है। विज्ञान की कुछ नई शाखाएँ यथा टेलीपैथी (telepathy), पैरा साइकोलॉजी (Para Psychology) मनुष्यों / को आदि विकसित होने वाली

	M	T	W	T	F	S	S
FEBRUARY						1	2
	3	4	5	6	7	8	9
	10	11	12	13	14	15	16
	17	18	19	20	21	22	23
	24	25	26	27	28		

अनुभूतियों का अध्ययन कर रही है। इसप्रकार उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट होता है कि जहाँ दर्शनशास्त्र और विज्ञान में अनेक समानताएँ हैं, वहीं दोनों में कुछ अन्तर भी है। इसके बावजूद आज दर्शन और विज्ञान को अलग नहीं किया जा सकता। किन्तु दर्शनशास्त्र का वैज्ञानिकरण करना या, इसे विज्ञान के पीछे-पीछे चलना, कहना भी उचित नहीं है जैसा कि समकालीन तार्किक भाववादी दार्शनिक कहते हैं। दर्शन का अपना कार्यक्षेत्र होना चाहिए और जिसतरह दर्शनशास्त्र विज्ञान की उपेक्षा नहीं करता, उसीतरह विज्ञान को भी दर्शन की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए। विशेषकर आज के इस आणविक युग में तो विज्ञान और दर्शन का साथ होना अत्यन्त आवश्यक है। आज की परिस्थितियों को देखते हुए तो यह निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि विज्ञान अगर दर्शनशास्त्र की उपेक्षा करता है, तो यह किसी दिन समस्त विश्व के लिए अत्यन्त निराशाजनक और घातक सिद्ध होगा। आज का वैज्ञानिक अगर कोरा वैज्ञानिक न होकर दार्शनिक बुद्धि वाला भी हो, तो विश्व हित में यह लाभदायक होगा।

यह ठीक है कि विज्ञान हमें चमत्कृत कर देनेवाला ज्ञान प्रदान करता है किन्तु दर्शनशास्त्र से हमें जो विवेक बुद्धि मिलती है वह इस ज्ञान को नियंत्रित करने के लिए अत्यन्त आवश्यक है। अतः बिना दर्शन के विज्ञान उसी प्रकार व्यर्थ है, जिस प्रकार बिना मूल्यांकन के सत्य।

इसप्रकार हम देखते हैं कि विज्ञान और दर्शनशास्त्र एक-दूसरे के विपरीत नहीं बल्कि पूरक हैं। यही कारण है कि आज के वैज्ञानिक दर्शन के क्षेत्र में आकर ही संतुष्ट हो पाते हैं और आज का दार्शनिक भी बिना विज्ञान के आगे नहीं बढ़ता।

26 SUNDAY